بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ نَحۡمَدُہٗ وَنُصَلِّیۡ عَلٰی رَسُوۡلِہِ الۡکَرِیۡمِ وَعَلٰی عَبۡدِہِ الۡمَسِیۡحِ الۡمَوۡعُوۡد
لَا اِلٰہَ اِلَّا اللّٰہُ مُحَمَّدٌ رَّسُوۡلُ اللّٰہِ
دفتر مجلس انصاراللہ بھارت
Office Of The Majlis Ansarullah Bharat
Mohallah Ahmadiyya Qadian-143516, Distt.Gurdaspur (Punjab) INDIA

सारांश ख़ुत्बः जुम्अः सय्यदना अमीरुल मोमिनीन हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद ख़लीफ़तुल मसीह अल-ख़ामिस अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़, बयान फ़र्मूदा 13 सितम्बर 2024 स्थान मस्जिद मुबारक, इस्लामाबाद, यू.के.

ख़ंदक़ (खाई) नामक युद्ध के संदर्भ में सीरत-ए-नबवी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का बयान।

Mob: 9682536974 E.mail. ansarullah@qadian.in Khulasa khutba-13.09.24
محلہ احمدیہ قادیان۔پنجاب۔143516

أَشْهَدُ أَنْ لَا إِلٰهَ إِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهُ لَا شَرِيْكَ لَهُ وَأَشْهَدُ أَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهُ وَرَسُوْلُهُ

امّا بعد فاعوذ باللہ من الشیطٰن الرجیم۔ بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعَالَمِيْنَ۔ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ۔ مَالِكِ يَوْمِ الدِّيْنِ۔ إِيَّاكَ نَعْبُدُ وَإِيَّاكَ نَسْتَعِيْنُ۔ اِهْدِنَا الصِّرَاطَ الْمُسْتَقِيْمَ۔ صِرَاطَ الَّذِيْنَ أَنْعَمْتَ عَلَيْهِمْ غَيْرِ الْمَغْضُوْبِ عَلَيْهِمْ وَلَا الضَّآلِّيْنَ۔

तशह्हुद तअव्वुज़ तथा सूरः फ़ातिहः की तिलावत के बाद हुज़ूर-ए-अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया- जंग-ए-अहज़ाब के हवाले से पिछले जुम्अः के ख़ुत्बः में वर्णन हो रहा था कि किस तरह ख़ैबर के यहूदियों के सन्धि विच्छेद तथा कुछ अन्य कारणों से काफ़िरों की एक सेना तय्यार हुई ताकि मुसलमानों पर हमला करके उन्हें नष्ट किया जा सके। इसकी अधिक व्याख्या इतिहास की पुस्तकों से यूँ मिलती है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने सुलैत तथा सुफ़यान बिन औफ़ असलमी को सेना के विषय में जानकारी कि लिए भेजा। ये दोनों गए तो दुश्मन की नज़र उन पर पड़ गई तथा ये दोनों लड़ते लड़ते शहीद हो गए। जब खन्दक़ खोदने का फ़ैसला हो गया तब रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम अपने घोड़े पर सवार हुए तथा आप स. के साथ कई महाजिर एवं अन्सार भी थे। आप स. ने सेना के पड़ाव के लिए जगह तलाश की तथा मुसलमानों ने बनू क़ुरैज़ा से खुदाई के उपकरण, कुदालें, बड़े कुल्हाड़े तथा बेलचे इत्यादि उधार लिए और रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने ख़न्दक़ की हर एक दिशा की खुदाई एक जाति के हवाले कर दी। रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने स्वयं भी खुदाई में भाग लिया तथा मिट्टी अपनी पीठ पर उठाते, यहाँ तक कि आप स. की पीठ एवं पेट धूल से भर जात। जो मुसलमान अपने काम को पूरा कर लेते, वे दूसरे की सहायता के लिए पहुंच जाते, यहाँ तक कि ख़न्दक़ खोदने का काम पूरा हो गया। ख़न्दक़ खोदने में कोई मुसलमान पीछे नहीं रहा। हज़रत अबू बकर रज़ीयल्लाहु

अन्हु तथा हज़रत उमर रज़ी. को जब टोकरियाँ न मिलतीं तो जल्दी में अपने कपड़ों में मिट्टी भर कर ले जाते।

हज़रत मिर्ज़ा बशीर अहमद साहब रज़ी. ने भी बयान फ़रमाया है- कहते हैं कि इतनी बड़ी सेना का अवागमन गुप्त रखना काफ़िरों के लिए कठिन था और फिर आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का जासूसी का प्रबन्ध भी अत्यंत सुदृढ़ था। अभी क़ुरैश की सेना मक्के से निकली ही थी कि आप स. को उसकी सूचना मिल गई जिस पर आप स. ने सहाबियों से विचार विमर्श किया। इस गोष्ठि में ईरान के एक निष्ठावान सहाबी सलमान फ़ारसी रज़ी. भी शामिल थे जो अरब से बाहर लड़ी जाने वाली जंगों की पद्यति से परिचित थे। उन्होंने यह सुझाव दिया कि मदीने के असुरक्षित क्षेत्र के सामने एक लम्बी तथा गहरी खाई खोद कर अपने आपको सुरक्षित कर लिया जावे। आप स. ने इस सुझाव को स्वीकार फ़रमाया। मदीने का नगर तीन दिशाओं से पर्याप्त सुरक्षित था तथा केवल शाम देश की ओर वाली दिशा ऐसी थी जहाँ दुश्मन एकत्र होकर हमला कर सकता था। इसलिए आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इस असुरक्षित दिशा में खाई खोदने का निर्देश दिया तथा आप स. ने स्वयं अपनी निगरानी में उस स्थल पर निशान लगा कर कार्य विभाजन के नियम के अंतर्गत ख़न्दक़ को दस दस हाथ अर्थात पन्द्रह पन्द्रह फ़िट के टुकड़ों में विभाजित करके हर एक टुकड़ा दस सहाबियों के हवाले फ़रमाया। इन पार्टियों के विभाजन में यह शुभ मतभेद उत्पन्न हुआ कि सलमान फ़ारसी किस दल में शामिल हों, क्या वे मुहाजिर समझे जाएँ अथवा इसके बावजूद कि वे इस्लाम के आने से पहले ही मदीना में आए हुए थे, अन्सार में शामिल हों। अन्ततः यह मतभेद आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के सामने पेश हुआ तथा आप स. ने मुस्कुराते हुए फ़रमाया कि सलमान दोनों में से नहीं हैं, बल्कि سَلْمَانُ مِنَّا اَهْلَ الْبَيْتِ अर्थात मेरे परिवार का अंश समझे जाएं। उस समय से सलमान रज़ी. को यह सौभाग्य प्राप्त हो गया कि वे मानो आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के घर के आदमी समझे जाने लगे।

ख़न्दक़ का सुझाव स्वीकृत होने के बाद सहाबा रज़ी. की जमाअत मज़दूरों के लिबास पहन कर घटना स्थल पर निकल आई। खुदाई का काम सरल नहीं था और फिर मौसम भी ठंड का था जिसके कारण उन दिनों में सहाबियों ने बड़ी कठिनाईयाँ सहन कीं तथा चूंकि दूसरे कारोबार पूर्णतः बन्द हो गए थे इसलिए उन दिनों में भूख तथा निराहार अवस्था भी सहन करना पड़ी। सहाबियों के पास सेवक एवं ग़ुलाम भी नहीं थे इस लिए सभी सहाबियों को स्वयं अपने हाथों से काम करना पड़ता था। आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम भी अपने समय का अधिकांश भाग ख़न्दक़ के पास ही व्यतीत करते थे तथा कई बार स्वयं भी सहाबियों के साथ मिल कर खुदाई तथा मिट्टी की ढुलाई का काम करते थे तथा आप स. कई बार सहाबियों के मन को प्रफुल्ल रखने के लिए कविता पढ़ने लग जाते थे तथा सहाबा रज़ी. भी कई बार उसका जवाब कविता में दिया करते थे। ख़न्दक़ की खुदाई में आप स. का योगदान तथा आप स. की दुआओं की बरकत से सहाबी रज़ी. अपने दुःख एवं परिश्रम की अवस्था को भूल ही जाते थे। जहाँ एक ओर पवित्र काव्य होता तो दूसरी ओर हल्का फुल्का उपहास भी जारी रहता। सहाबियों के निरन्तर दिन रात के प्रयासों तथा हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की दुआओं की बरकत से खाई पूरी बन गई। इसके पूरा बनने की अवधि के

बारे में विभिन्न कथन हैं। पन्द्रह दिन तथा एक महीने के कथनों पर अधिक सहमति पाई जाती है। खाई की लम्बाई लगभग छः हज़ार गज़ अथवा लगभग साढ़े तीन मील थी। चौड़ाई तेरह चौदह फ़िट तथा गहराई दस फ़िट बनती है। यह खाई कई शताब्दियों तक सुरक्षित रही। आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की पवित्र पतनियाँ भी ख़तरे की इस घड़ी में पुरुषों के समान नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के साथ खड़ी नज़र आती हैं। कभी तो हज़रत आयशा रज़ी. कभी हज़रत उम्मे सलमा रज़ी. अथवा हज़रत ज़ैनब रज़ी. कुछ दिनों तक आप स. के साथ रहतों।

ख़ुदाई करते समय एक चट्टान के न टूटने वाली घटना भी बयान की जाती है। एक रिवायत में है कि आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने कुछ पानी मंगवाया तथा उसमें अपना थूक डाला, फिर आप स. ने अल्लाह तआला से दुआ मांगी तथा यह पानी उस पथरीली ज़मीन पर छिड़क दिया जिससे वह ज़मीन मुलायम होकर रेत की भांति हो गई। एक अन्य स्थान पर वर्णन है कि हज़रत सलमान फ़ारसी रज़ी. से एक चट्टान टूट नहीं रही थी तो आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने उनसे कुदाल लेकर चोट मारी तथा तीन शुभ सूचनाएँ भी सुनाईं। हज़रत मिर्ज़ा बशीर अहमद साहब रज़ी. इसके बारे में लिखते हैं कि तंगी एवं दुविधा की अवस्था में खाई खोदते खोदते एक स्थान पर एक पत्थर निकला जो किसी तरह टूटने में न आता था। अंत में परेशान होकर सहाबी रज़ी. आप स. की सेवा में उपस्थित हुए तथा निवेदन पूर्वक कहा कि एक पत्थर है जो टूटने में नहीं आता। आप स. तुरन्त वहाँ तशरीफ़ ले गए तथा एक कुदाल लेकर अल्लाह का नाम लेते हुए उस पत्थर पर मारी। लाहे की रगड़ से पत्थर में से एक चिंगारी निकली, जिस पर आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने ज़ोर के साथ अल्लाहु अकबर कहा तथा फ़रमाया कि मुझे शाम देश की चाबियाँ दी गईं और ख़ुदा की क़सम, इस समय शाम देश के भवन मेरी आँखों के सामने हैं, इस चोट से वह पत्थर कुछ थोड़ा सा टूट गया। दूसरी बार आप स. ने फिर अल्लाह का नाम लेकर कुदाल चलाई और फिर एक चिंगारी निकली, जिस पर आप स. ने फिर अल्लाहु अकबर कहा तथा फ़रमाया- इस बार मुझे फ़ारस की चाबियां दी गईं हैं तथा मदायन नामक स्थान के सफ़ेद भवन मुझे दिखाई दे रहे हैं। इस बार पत्थर टूटकर कुछ अधिक कमज़ोर हो गया। तीसरी बार आप स. ने फिर कुदाल मारी जिसके परिणाम स्वरूप फिर एक चिंगारी निकली, और आप स. ने फिर अल्लाहु अकबर कहा तथा फ़रमाया- अब मुझे यमन देश की चाबियाँ दी गईं हैं और ख़ुदा की क़सम, सनआ नामक नगर के द्वार मुझे इस समय दिखाए जा रहे हैं। अबकी बार वह पत्थर पूर्णतः टूट कर अपने स्थान से गिर गया। आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के ये नज़ारे कश्फ़ की अनुभूति से सम्बंध रखते थे। मानो उस दुविधा की स्थिति में अल्लाह तआला ने आप स. को मुसलमानों को भविष्य में मिलने वाली विजय एवं समृद्धि के दृश्य दिखा कर सहाबा रज़ी. में आशा एवं ख़ुशी की आत्मा पैदा फ़रमाई। मदीने के मुनाफ़िक़ों ने इन वादों को सुन कर मुसलमानों पर कटाक्ष किए कि घर से बाहर निकले का साहस नहीं तथा क़ैसर व किसरा के शासनों के सपने देखे जा रहे हैं। किन्तु ख़ुदा के ये वादे अपने अपने समय पर अर्थात कुछ तो आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के अन्तिम दिनों में, तथा अधिकांश आप स. के ख़लीफ़ाओं के ज़माने में पूरे होकर मुसलमान के ईमान में वृद्धि एवं सुदृढ़ विश्वास का कारण बने।

खाने का चमत्कार भी है। हज़रत मिर्ज़ा बशीर अहमद साहब रज़ी. ने एक घटना यूँ बयान फ़रमाई है कि इस अवसर पर एक निष्ठावान सहाबी जाबिर बिन अब्दुल्लाह रज़ी. ने आप स. के चेहरे पर भूख के कारण कमज़ोरी एवं दुर्बलता के प्रभाव देख कर आप स. से अपने घर जाने की आज्ञा ली तथा घर आकर अपनी पतनी से कहा कि क्या तुम्हारे पास खाने के लिए कुछ है? उसने कहा हाँ, कुछ जौ का आटा है और एक बकरी है। हज़रत जाबिर रज़ी. ने बकरी को काटा तथा आटे को गूंधा और अपनी पतनी से कहा तुम खाना तय्यार करो, मैं रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की सेवा में जाकर निवेदन करता हूँ कि तशरीफ़ ले आएँ। आप रज़ी. की पतनी ने कहा- देखना मुझे अपमानित मत करना, खाना कम है, रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के साथ अधिक लोग न आएँ। हज़रत जाबिर रज़ी. ने सावधानी के साथ आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने निवेदन पूर्वक कहा कि या रसूलुल्लाह! आप अपने कुछ सहाबियों के संग तशरीफ़ ले चलें तथा खाना खाएँ। आप स. ने फ़रमाया- खाना कितना है? मैंने निवेदन किया कि इतना और इतना है। आप स. ने फ़रमाया- ठीक है। फिर आप स. ने अपने आस पास दृष्टि डाल कर उच्च स्वर में फ़रमाया- ऐ अन्सार एवं मुहाजिरों की जमाअत! चलो जाबिर ने हमारी दावत की है। इस आवाज़ पर लगभग एक हज़ार भूख में भी संतुष्ट सहाबी आप स. के साथ हो लिए। आप स. ने जाबिर रज़ी. से फ़रमाया कि तुम जल्दी जाओ तथा अपनी पतनी से कह दो कि जब तक मैं न आऊँ, पतीले को चूल्हे पर से न उतारे तथा न ही रोटियाँ पकाना शुरु करे। जाबिर रज़ी. ने जल्दी से जाकर अपनी पतनी को सूचित किया। वह बेचारी पूरी तरह घबराई कि अब क्या होगा। परन्तु आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने वहाँ पहुंचते ही बड़ी शांति के साथ पतील तथा आटे के बर्तन पर दुआ फ़रमाई और फिर फ़रमाया- अब रोटियाँ पकाना शुरु कर दो। इसके बाद आप स. ने खाना बांटना शुरु किया, जाबिर रज़ी. रिवायत करते हैं कि मुझे उस ज़ात की क़सम जिसके हाथ में मेरी जान है कि उसी खाने से सब लोग तृप्त होकर उठ गए और अभी हमारा पतीला उसी तरह उबल रहा था तथा आटा उसी तरह पक रहा था।

ख़ुत्बः के अन्त में हुज़ूरे अनवर ने फ़रमाया। खाई के युद्ध के संदर्भ में अन्य बातें इन्शाअल्लाह आगे बयान करूँगा। दुआओं की ओर मैं ध्यान दिलाता रहता हूँ, इनकी ओर अधिक ध्यान रखें। अल्लाह तआला हमारे ईमानों को मज़बूत करे। हर एक स्थान तथा देश में रहने वाले अहमदी को, बंगला देश, पाकिस्तान तथा अन्य स्थानों पर हर एक उपद्रव से बचाए तथा दुनिया जिस आग में पड़ रही है तथा बड़ी तेज़ी से उसमें जाने का प्रयास कर रही है, उससे भी दुनिया को बचाए। अल्लाह तआला रहम फ़रमाए, अल्लाह तआला सारी शक्तियों का मालिक है। यदि अभी भी ये लोग सुधार की ओर पलटें तो अल्लाह तआला इनको कठिनाईयों से निकाल सकता है। अल्लाह तआला करे इनको बुद्धि एवं समझ आए।

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ نَحْمَدُهٗ وَنَسْتَعِيْنُهٗ وَنَسْتَغْفِرُهٗ وَنُؤْمِنُ بِهٖ وَنَتَوَكَّلُ عَلَيْهِ وَنَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنْ شُرُوْرِ اَنْفُسِنَا وَمِنْ سَيِّئَاتِ اَعْمَالِنَا مَنْ يَّهْدِهِ اللّٰهُ فَلَا مُضِلَّ لَهٗ وَمَنْ يُّضْلِلْهُ فَلَا هَادِيَ لَهٗ وَاَشْهَدُ اَنْ لَّا اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهٗ لَا شَرِيْكَ لَهٗ وَاَشْهَدُ اَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهٗ وَرَسُوْلُهٗ. عِبَادَ اللّٰهِ رَحِمَكُمُ اللّٰهُ اِنَّ اللّٰهَ يَاْمُرُ بِالْعَدْلِ وَالْاِحْسَانِ وَاِيْتَآءِ ذِي الْقُرْبٰى وَيَنْهٰى عَنِ الْفَحْشَآءِ وَالْمُنْكَرِ وَالْبَغْيِ يَعِظُكُمْ لَعَلَّكُمْ تَذَكَّرُوْنَ فَاذْكُرُوا اللّٰهَ يَذْكُرْكُمْ وَادْعُوْهُ يَسْتَجِبْ لَكُمْ وَلَذِكْرُ اللّٰهِ اَكْبَرُ.

हिन्दी अनुवाद को अधिक सुन्दर बनाने हेतु सुझाव का स्वागत है, संपर्क अनुवादक-9781831652
टोल फ्री नम्बर अहमदिय्या मुस्लिम जमाअत, क़ादियान, पंजाब-18001032131